ISSN: 2393-8048
An International Conference on Basic Education & Computers in India
Sri Vinayak Mahavidhalya, Sri Vijaynagar, Rajasthan
11 June 2017

21वीं सदी में लोकतंत्र का बदलता स्वरूप: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

राजेंद्र कुमार वर्मा, सहायक आचार्य, एस जी एन गर्ल्स कॉलेज, श्री गंगानगर (राजस्थान)

सारांश

21वीं सदी में लोकतंत्र का स्वरूप सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी और राजनीतिक परिवर्तनों के कारण निरंतर बदल रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया, वैश्वीकरण तथा नागरिकों की बढ़ती राजनीतिक जागरूकता ने लोकतांत्रिक व्यवस्था के सामने नए अवसरों के साथ-साथ अनेक चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं। डिजिटल माध्यमों ने नागरिकों को राजनीतिक विमर्श, जनमत निर्माण और शासन प्रक्रिया में भागीदारी के नए अवसर प्रदान किए हैं। दूसरी ओर, फेक न्यूज़, राजनीतिक ध्रुवीकरण, डिजिटल असमानता, निजता संबंधी चिंताएँ तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति घटता विश्वास जैसी समस्याएँ लोकतंत्र की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही हैं। यह शोध-पत्र 21वीं सदी में लोकतंत्र के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करते हुए उसके समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों और संभावनाओं का अध्ययन करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि तकनीकी एवं सामाजिक परिवर्तन लोकतांत्रिक शासन, नागरिक भागीदारी और राजनीतिक संस्थाओं को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं। निष्कर्षतः, समावेशी, पारदर्शी और उत्तरदायी लोकतंत्र के लिए तकनीकी विकास के साथ लोकतांत्रिक मूल्यों और संस्थागत जवाबदेही को मजबूत करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द : लोकतंत्र, 21वीं सदी, डिजिटल राजनीति, नागरिक भागीदारी, सोशल मीडिया, लोकतांत्रिक संस्थाएँ, राजनीतिक जागरूकता